भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 4 **जनवरी** 2003 **अंक** 1

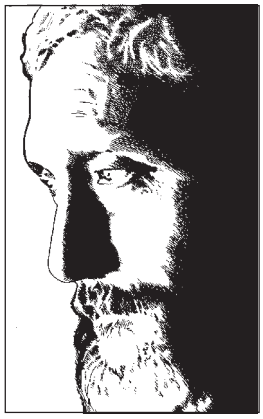

'निराला' ने मसनवी नक़ब लगाई

पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' अपने गाँव गढ़कोला जा रहे थे। रात में एक कस्बे की धर्मशाला में ठहरे। गाँव में एक मकान में सेंध लगाकर चोरी हो गई। लोगों का संदेह विशालकाय देह 'निराला'जी पर गया। थाने पर रिपोर्ट हुई। पुलिस आई। दरोगाजी ने तफतीश शुरू की। 'निराला'जी ने कहा वे कवि हैं कविता लिखते हैं उनसे चोरी-चमारी से कोई वास्ता नहीं, वे अपने गाँव जा रहे हैं, रात में रुक गये। दरोगाजी ने पूछा—आपको कोई जानता है? निरालाजी ने कहा—दारागंज, इलाहाबाद में इंस्पेक्टर ऑफ स्कूल, पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी जानते हैं। उस समय पूरे प्रदेश में एक या दो इंस्पेक्टर ऑफ स्कूल होते थे। श्रीनारायण चतुर्वेदीजी से सभी परिचित थे। दरोगाजी इलाहाबाद आये। श्रीनारायणजी के दारागंज आवास पर पहुँचे। पंडितजी से कहा—एक शख्स जो अपना नाम सुरैय्याकान्त तिरपाठी बताता है—अपने को शायर साया करता है ने मसनवी नक़ब लगाई, वह कहता है कि आप उसे जानते हैं। चतुर्वेदीजी खूब हँसे और अपने मित्र पं० उदयनारायण तिवारी जो दारागंज में ही रहते थे को बुलवाया। तिवारीजी से कहा—सुना, निराला ने मसनवी नक़ब लगाई है।, दरोगाजी आये हैं, बताते हैं निराला ने कस्बे में उसने मसनवी नक़ब लगाई, चलो मसनवी नक़ब देखकर आयें।

चतुर्वेदीजी और उदयनारायण तिवारी दरोगाजी के साथ उस कस्बे में पहुँचे और निरालाजी को लेकर आये।

(यह घटना पं० श्रीनारायण चतुर्वेदीजी ने स्वयं सुनाई थी।)

साहित्य का सच

'भारतीय वाङ्मय' के नवम्बर 2002 अंक में 'इतिहास का सच' आलेख पर अनेक प्रतिक्रियाएँ आयीं। वयोवृद्ध साहित्यकार डॉ० रामचन्द्र तिवारी ने लिखा—इतिहास के सच के समान ही साहित्य के सच का प्रश्न भी महत्त्वपूर्ण और गम्भीर विचार की अपेक्षा रखता है। जब-जब साहित्य को संघबद्ध करने की कोशिश की गयी है, उसने अपनी रचनात्मकता खोई है और उसकी अर्थ-भूमि संकीर्ण हुई है।

आज के सन्दर्भ में यह ज्वलन्त प्रश्न है कि जब साहित्य राजनीति की भाँति विभिन्न खेमों में बँट गया है। इतिहासक्रम से लें तो छायावाद, प्रगतिवाद, आधुनिकतावाद, यथार्थवाद आदि चरणों और वादों में विभक्त साहित्यिक मूल्यांकन क्रमशः निस्तेज हो गये हैं। किन्तु मानवीय संवेदना की मौलिकता आज भी बरकरार है।

विभिन्न वर्गों में बँटी राजनीति ने दलित साहित्यकारों की जमात खड़ी कर दी है जो यह कहते हैं कि दलित संवेदनाजन्य साहित्य दलित साहित्यकार ही लिख सकता है। क्या इसके पूर्व लेखकों ने अपनी रचनाओं में दलित संवेदना को अभिव्यक्त नहीं किया है। आज के दलित साहित्यकार की संवेदना प्रतिशोधात्मक और आक्रमक है, उसमें संवेदना कम राजनीतिक अभिव्यक्ति अधिक है।

इस तरह नारी चेतना के सन्दर्भ में स्त्रीविमर्श की लेखिकाओं का एक वर्ग तेजी से बढ़ रहा है। उनकी मान्यता है कि स्त्री लेखिका ही स्त्रियों की समस्या को सच्चाई से लिख सकती हैं। वस्तुतः प्रतिक्रिया के लेखन में उबाल ज्यादा होता है और जीवन की गहन अनुभूति कम होती है।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने एक सभा में श्रोताओं के इस प्रश्न पर कि आज साहित्य में अनेक विसंगतियां आ गयी हैं, ऐसे साहित्य का भविष्य क्या है? के उत्तर में कहा था कि कालदेवता उसी साहित्य को कालातीत होने से बचा सकेंगे जिसमें शाश्वत मानवीय संवेदना होगी। कबीर, तुलसी, सूर, मीरा, निराला, मुक्तिबोध आज भी जन-जन में समाये हुए हैं। प्रेमचंद की रचनाएँ आज भी सभी वर्गों को आकृष्ट करती हैं। किन्तु राजनीतिक सन्दर्भों में रचा गया साहित्य क्या समय की धरती पर अपने पदचिन्ह सुरक्षित रख सकेगा?

'साहित्य का सच' इन्हीं कारणों से 'इतिहास के सच' की भाँति विवादास्पद बन गया है। इस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने की अपेक्षा है। अपनी सम्पूर्णता में ही साहित्य साहित्य है, मनुष्य के हृदय को जैसे टुकड़ों में विभक्त नहीं कर सकते उसी प्रकार साहित्य को भी दायरों में बाँटा नहीं जा सकता।

राजनीतिक प्रभाव में रचा गया साहित्य राजनीति के पतन के साथ अपना प्रभाव खो देता है। आज हमें इस तथ्य के प्रति जागरूक और सचेत रहने की अपेक्षा है। विश्व-साहित्य में अपनी पहचान बनाये रखने की आवश्यता है।

डॉ० रामचन्द्र तिवारी के पत्र की पंक्तियों पर विचार करें—

''साहित्य का जगत् सम्भावना का जगत् है। सम्भावना को यथार्थ से प्रेरणा और उत्तेजना तो मिल सकती है, किन्तु यथार्थ उसकी सीमा नहीं बन सकता। आज जब 'इतिहास' को नकारा जा रहा है तो उसके 'स्वरूप' उसके 'दर्शन' उसकी 'सच्चाई' और उसकी 'वस्तुनिष्ठता' तथा उसकी निरन्तरता एवं 'पुनर्नवता' के प्रश्नों पर गम्भीर चिन्तन की आवश्यकता है।''

— पुरुषोत्तमदास मोदी

पुरस्कार-सम्मान

डॉ० गोविन्दचन्द्र पाण्डे सम्मानित

प्राचीन इतिहास तथा संस्कृति के विद्वान् **डॉ० गोविन्दचन्द्र पाण्डे** को साहित्य अकादमी ने अपने सर्वोच्च सम्मान महत्तर सदस्यता (फेलोशिप) से विभूषित किया है।

डॉ० पांडे राजस्थान तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुलपति रह चुके हैं। इतिहास, संस्कृति और दर्शन पर उनके विशिष्ट ग्रंथ प्रकाशित हैं।

कमलेश्वर को शलाका सम्मान

हिन्दी के जाने-माने साहित्यकार एवं कथाकार **कमलेश्वर** का चयन शलाका सम्मान के लिए किया गया है। हिन्दी अकादमी ने वर्ष 2002-2003 के लिए उन्हें इस सम्मान के लिए चुना है। हिन्दी अकादमी के इस सर्वोच्च सम्मान के तहत उन्हें एक लाख 22 हजार एक सौ ग्यारह रुपये प्रदान किये जाएँगे। साथ ही उन्हें शाल, प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिह्न आदि भी भेंट किया जाएगा।

वर्ष 2002-2003 के साहित्यकार सम्मान के अन्तर्गत देवेन्द्र इस्सर, डॉ० रामगोपाल शर्मा 'दिनेश', डॉ० महीप सिंह, डॉ० विश्वनाथ त्रिपाठी, डॉ० नरेन्द्र मोहन, डॉ० विजयमोहन सिंह, बालस्वरूप राही, डॉ० राज बुद्धिराजा, प्रो० नित्यानंद तिवारी, डॉ० शम्भूनाथ सिंह (पत्रकारिता) तथा दीपक चौरसिया (पत्रकारिता) सम्मानित होंगे। प्रत्येक साहित्यकार एवं हिन्दी सेवी को 21000 रुपए नकद, शाल, प्रशस्ति पत्र तथा प्रतीक चिह्न प्रदान किया जाएगा।

'काका हाथरसी सम्मान' व्यंग्य चित्रकार हरीशचन्द्र 'काक' को दिया जाएगा।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कार

वर्ष 2001 के भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कारों की घोषणा कर दी गई है। सूचना और प्रसारण राज्यमंत्री, श्री रमेश बैस ने 8 जनवरी, 2003 को नई दिल्ली में पुरस्कार प्रदान किये।

पत्रकारिता एवं जनसंचार वर्ग में वर्ष 2001 का प्रथम पुरस्कार श्री अजयकुमार सिंह को उनकी पांडुलिपि 'मीडिया इतिहास और हाशिये के लोग' के लिए, द्वितीय पुरस्कार श्री सत्येन्द्र शरत को उनकी पांडुलिपि 'रेडियो नाटक' के लिए और तृतीय पुरस्कार श्री कृष्णचंद्र बेरी को उनकी पुस्तक 'प्रकाशकनामा' के लिए दिया गया है। पाँच मान पुरस्कार डॉ० ठाकुरदत्त शर्मा को उनकी पुस्तक 'इलेक्ट्रॉनिक मीडिया' के लिए, श्री हंसदेव की पुस्तक 'उत्तर आधुनिक मीडिया तकनीक' के लिए, श्री राजेश माथुर की पांडुलिपि 'हिन्दी पत्रकारिता की नई दिशा' के लिए, श्री मिलापचंद्र डडिया की पुस्तक 'मुखौटों के पीछे—असली चेहरों को उजागर करते पत्रकारिता के पचास वर्ष' के लिए तथा श्री विजय कुलश्रेष्ठ की पांडुलिपि 'फीचर लेखन स्वरूप और प्रकार' के लिए दिये गये।

प्रथम पुरस्कार 35,000/- रुपये का, द्वितीय पुरस्कार 25,000/- रुपये का, तृतीय पुरस्कार 20,000/- रुपये का और प्रत्येक मान पुरस्कार 5,000/- रुपये का दिया जाता है।

बाल साहित्य वर्ग का प्रथम पुरस्कार श्री रमेश तैलंग को उनकी पांडुलिपि 'हरी भरी धरती' को और द्वितीय पुरस्कार श्री देवेन्द्र मेवाडी को उनकी पुस्तक 'फसलें कहें कहानी' को दिया गया है। महिला समस्या वर्ग का प्रथम पुरस्कार कुमारी अंजली की पांडुलिपि 'महिला अस्मिता और अपराध' को और द्वितीय पुरस्कार श्रीमती वन्दना शर्मा को उनकी पांडुलिपि 'महिलाओं का संसार और अधिकार' को दिया गया है। राष्ट्रीय एकता वर्ग का प्रथम पुरस्कार श्री अशोककुमार श्रीवास्तव को उनकी पांडुलिपि 'राष्ट्रीयता : दर्शन एवं अभिव्यक्ति' को और द्वितीय पुरस्कार डॉ० बानो सरताज को उनकी पुस्तक 'राष्ट्रीय एकता और उर्दू शायरी' को दिया गया है।

इन तीनों वर्गों के लिए प्रथम पुरस्कार की राशि 15,000/- रुपये तथा द्वितीय पुरस्कार की राशि 10,000/- रुपये है।

साहित्य अकादमी पुरस्कार

वर्ष 2002 के अकादमी पुरस्कारों के लिए 22 भाषाओं के लेखकों का चयन किया है। अकादेमी के सचिव प्रो० के० सच्चिदानन्दन ने बताया कि पुरस्कारों के रूप में उत्कीर्ण ताम्रफलक और चालीस हजार रुपये इन लेखकों को 17 फरवरी को दिल्ली में होने वाले विशेष समारोह में प्रदान किए जाएंगे। अकादेमी ने 17 पुस्तकों का चयन अनुवाद पुरस्कार के लिए भी किया। एक पुरस्कार 1996 से 2000 के बीच प्रकाशित पुस्तकों के लिए दिए गए हैं। अनुवाद पुरस्कार के तहत ताम्रफलक के साथ पन्द्रह हजार रुपये दिये जाते हैं। भोपाल में रहने वाले **राजेश जोशी** को उनके कविता संग्रह 'दो पंक्तियों के बीच' के लिए पुरस्कृत किया गया है। फिल्मकार तथा गीतकार **गुलजार** को उनके कहानी संग्रह 'धुआँ' के लिए चुना गया है। इसके साथ ही अनुवाद के लिए भी सम्मानित 22 अनुदित पुस्तकों की घोषणा की गई जिसमें हिन्दी की पाँच पुस्तकें दूसरी भाषाओं में अनूदित की गई हैं वहीं अंग्रेजी की एक पुस्तक को हिन्दी में अनूदित किया गया है। अन्य 21 भाषाओं के लिए पुरस्कार पाने वालों में **नलिनीधर भट्टाचार्य** (असमी), **संदीपन चट्टोपाध्याय** (बंगाली), **ओम विद्यार्थी** (डोगरी), **अमित चौधरी** (अंग्रेजी), **ध्रुव भट्ट** (गुजराती), **एस० नारायण सेट्टी** (कन्नड़), **नाजी मुनावर** (कश्मीरी), **हेमा नायक** (कोंकणी), **सोमदेव** (मैथिली), **के०जी० शंकर पिल्लई** (मलयालम), **आर०के० भुबंसना** (मनिपुरी), **महेश इलकुंच्वर** (मराठी), **प्रेम प्रधान** (नेपाली), **सरतकुमार मोहंती** (उड़िया), **हरभजन हलवालरवी** (पंजीबी), **भारत ओला** (राजस्थानी), **काशीनाथ मिश्रा** (संस्कृत), **हरि हिमथानी** (सिंधी), **सिरपी बालासुब्रमनियम** (तमिल), **चेकुरी रामाराव** (तेलुगु), **गुलजार** (उर्दू) शामिल हैं।

ज्ञानरंजन व राजेन्द्र शर्मा को शमशेर सम्मान

हिन्दी के दिवंगत कवि **शमशेर बहादुर सिंह** की स्मृति में दिया जाने वाला 'शमशेर सम्मान' इस वर्ष प्रसिद्ध लेखक ज्ञानरंजन और कवि राजेन्द्र शर्मा को दिया जायेगा। शमशेर सम्मान के आयोजक डॉ० अक्षयकुमार वर्मा के अनुसार 'पहल', पत्रिका के सम्पादक एवं कथाकार ज्ञानरंजन तथा भोपाल के कवि राजेन्द्र शर्मा को क्रमश: कथेतर साहित्य तथा कविता के लिये यह सम्मान 12 जनवरी को खंडवा में एक समारोह में दिया जायेगा। सम्मान में पाँच हजार रुपये की राशि तथा प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिन्ह शामिल है।

'अपने समय का आईना' का लोकार्पण

पुस्तक का लोकार्पण करते हुए कमलेश्वर ने कहा, 'अपने समय का आईना' एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक है। सुभाष सेतिया ने इसके माध्यम से समय के जरूरी सवालों और मुद्दों पर चर्चा की है। संस्कृति, समाज और संचार विमर्श में उन्होंने अपने समय की सच्चाईयों को सामने रखा है। इस काम में संचार माध्यमों का उनका अनुभव बहुत काम आया है। स्त्री को पुरुष की भोग्या के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए।

सामयिक प्रकाशन द्वारा आयोजित इस समारोह की पुस्तक चर्चा में हिमांशु जोशी, महेश दर्पण, शेरजंग गर्ग, प्रदीप पंत, देवेन्द्र चौबे, महेश भारद्वाज और पुस्तक के लेखक सुभाष सेतिया ने अपने विचार रखे।

'हम सभ्य औरतें' का लोकार्पण

पिछले कुछ वर्षों में स्त्री विमर्श पर जितनी पुस्तकें आई हैं, उनमें किसी भी पुस्तक की भाषा मनीषा की पुस्तक 'हम सभ्य औरतें' सरीखी नहीं है। 'खरी-खोटी' की टिप्पणियों के जरिए मनीषा ने नारी विमर्श में अपनी अलग पहचान बनाई है। यह पुस्तक बताती है कि मर्दवादी सोच समाज की सबसे बड़ी दुश्मन है। यह विचार गाँधी शांति प्रतिष्ठान के सभागार में मूर्धन्य आलोचक डॉ० नामवर सिंह ने सामयिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित मनीषा की पुस्तक 'हम सभ्य औरतें' का लोकार्पण करते हुए कहे। उन्होंने सुभद्राकुमारी चौहान, महादेवी वर्मा और प्रगतिशील दौर में इस्मत चुगताई समेत अनेक महिला रचनाकारों के अवदान को रेखांकित करते हुए मनीषा की चुनौती भरी सोच और भाषा की प्रशंसा की।

नववर्ष की शुभकामना

विश्वविद्यालय प्रकाशन

वाराणसी

कथन

हिन्दी में पुस्तक समीक्षा दोयम दर्जे का काम माना जाता है। इसी कारण 'जाने-माने' और 'बड़े' लेखक पुस्तक समीक्षा नहीं करते। यह काम 'उभरने को उत्सुक', नव-नवोदित और कुछ उदित हुए, कुछ न हुए, कुछ बढ़वार में अटक गए 'कम जाने' और उससे भी कम 'माने' जाने वाले लेखक किया करते हैं। इनमें ज्यादातर हिन्दी के विद्यार्थी शोधार्थी होते हैं। ये 'उभारोत्सुक' युवतर लेखक समीक्षा कर्म को उदर-पूर्ति का साधन मानकर चलते हैं। इससे उन्हें साहित्य में आने का 'चांस' मिलता है। **— सुधीश पचौरी**

❑ ❑ ❑

वर्तमान राजनीति तथा संस्थाएँ यथार्थवादी साहित्यिक जमीन तैयार करने के बजाय नौकरशाहों व राजनेताओं की रचनाओं को साहित्य मान रही हैं। इनकी पीड़ा यह भी है कि ऐसे माहौल में खरी-खरी बातें कहने वाले कवि पीछे छूट जाते हैं।

पहले कम पुस्तकें छपती थी लेकिन खूब बिकती थीं। वर्तमान में तो नौकरशाह और राजनेता मिलकर कविताएँ लिखकर लोकार्पण करा रहे हैं।

कविता तो इतनी गद्य हो गयी है कि कुछ कवियों ने लय व छन्द को बदनाम कर दिया है। यही नहीं गद्य में बहुत कम मुहावरे दिखायी पड़ते हैं। स्तरहीन लेखन करने वालों की जमात शायद यह भूल जाती है कि इससे साहित्यकारों की बड़ी अमानत खो रही है। **— नामवर सिंह**

❑ ❑ ❑

हिन्दी का नया लेखक महानगरों में नहीं बन रहा। वह अब भी छोटे नगरों में ही बन रहा है। वह कस्बाई जीवन में बनता है, जहाँ बौद्धिकता कस्बे की सड़ांध से मुक्ति का क्षण देती है। कस्बे-कस्बे जाइए, नगर-नगर घूमिए, आपको साहित्यिक गोष्ठियाँ करनेवालों की नई जमातें मिलेंगी। अध्यापक, प्रवक्ता, डॉक्टर, वकील, सामाजिक कार्यकर्ता आदि हर नगर में साहित्यिक संध्याएँ करते रहते हैं। यदि हम हिन्दी की पत्रिकाओं को पढ़ें तो हमें सबसे ज्यादा पत्र-लेखक ऐसे ही नगरों से मिलेंगे जिन्हें नागरिक स्तरीयता के पैमाने से बी, सी या डी ग्रेड के नगर कहा जाता है।

हिन्दी का नया लेखक किस प्रकार का बन सकता है? अपने शहर से घिन करता हुआ, अपने आप से भागता हुआ। वह बस एक मौका चाहता है कि किसी तरह दिल्ली आ जाए। दिल्ली में उसका नाम नहीं आया तो मानो साहित्य के इतिहास में नाम नहीं आया।

इलाहाबाद, बनारस, लखनऊ अब साहित्य की सनद नहीं देते। दिल्ली की सनद ही चलती है। हिन्दी साहित्य का साम्राज्य और उसकी राजधानी दिल्ली ही है। दिल्ली राजधानी न होती तो हिन्दी को वह जगह न मिलती जो मिली है। इसी साम्राज्य में कस्बे और छोटे शहर का लेखक आता है और लाइन में लग जाता है। उसे मालूम होता है कि साहित्य से क्या लेना है। वह साहित्य के गणित का माहिर होने लगता है।

'लेखनम्-प्रकाशनम्-समीक्षाम्-चर्चाम्-इनामम्'—आदि की प्रक्रिया में सिद्ध होकर एक दिन वह दिल्ली के साहित्य में पच्चीस गज का अपना मकान बना ही डालता है। फिर इतिहास में जाने लगता है और यह काम वह अपने नगर कस्बे से भाग कर करता है। सबसे पहले वह अपने कष्टकारी अतीत को भुलाता है। इसलिए कविता-कहानी में कस्बों के नगरों के सच्चे सजीव चित्रण नहीं मिलते.... जबकि महानगरीयता के प्रति चिढ़ मिलती है।

हिन्दी का नया लेखक हिसाबी-किताबी ज्यादा है। दुःख कसक को विस्मरण-मरण की ओर ले जाता हुआ। जड़ रहित होकर जब वह फिर जड़ तलाशने लगता है तो विभक्त हो जाता है।

कहता कुछ है, सुनता कुछ है, लिखता कुछ है, देखता कुछ है। वह एक फँसाव में होता है। समय के अनुसार वह इस फाँस में अपने को निवेशित करना सीख ही जाता है। तब इतिहास में आता है। **— सुधीश पचौरी**

❑ ❑ ❑

आलोचना पटवारीगिरी का काम नहीं जिसमें रचनाओं को 'दाखिल-खारिज' होता है। अगर आलोचना अपने समय और समाज की गहरी सांस्कृतिक प्रक्रियाओं से जुड़ी न हो और उसकी जरूरतों पर ध्यान न देती हो तो फिर वह रचनाओं की समीक्षा मात्र बनकर रह जाती है।

— मैनेजर पाण्डेय

❑ ❑ ❑

धर्म, दर्शन, अध्यात्म, संत-महात्मा जीवन चरित

प्रमुख ग्रन्थ

स्वामी दयानन्द जीवनगाथा
डॉ० भवानीलाल भारतीय 120.00

भारतीय मनीषा के अग्रदूत :
पं० मदनमोहन मालवीय
सं० डॉ० चन्द्रकला पाडिया 120.00

सरदार माने सरदार *डॉ० गुणवन्त शाह* 25.00

आचार्य नरेन्द्रदेव : युग और नेतृत्व
मुकुट बिहारीलाल 50.00

अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर 'प्रसाद'
सं० पुरुषोत्तमदास मोदी 150.00

भारत-भूषण महामना
पं० मदनमोहन मालवीय
डॉ० उमेशदत्त तिवारी 100.00

जो छोड़ गये : वे भी रहेंगे *शंकरदयाल सिंह* 40.00

मेरा बचपन : मेरा गाँव, मेरा संघर्ष :
मेरा कलकत्ता *रामेश्वर टाँटिया* 25.00

वे दिन वे लोग *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 60.00

चित्र और चरित्र *विश्वनाथ मुखर्जी* 40.00

मुझे विश्वास है *विमल मित्र* 60.00

मेरे पुलिस सेवा के वे दिन
विश्वनाथ लाहिरी 80.00

हारी हुई लड़ाई का वारिस
(स्व० ठाकुरप्रसाद सिंह) *उमेशप्रसाद सिंह* 100.00

सरदार माने सरदार *डॉ० गुणवन्त शाह* 25.00

साधना और सिद्धि *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 250.00

धर्म, दर्शन और विज्ञान में रहस्यवाद
सं० प्रो० कल्याणमल लोढ़ा व
डॉ० वसुन्धरा मिश्र 250.00

सनातन हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म
श्यामसुन्दर उपाध्याय 75.00

बृहत श्लोक संग्रह
सं० प्रो० कल्याणमल लोढ़ा व
अवधेशप्रसाद सिंह 200.00

शिवस्वरूप बाबा हैड़ाखान
सद्गुरुप्रसाद श्रीवास्तव 150.00

करुणामूर्ति बुद्ध *डॉ० गुणवन्त शाह* 25.00

महामानव महावीर *डॉ० गुणवन्त शाह* 30.00

उत्तराखण्ड की सन्त परम्परा
डॉ० गिरिराज शाह 150.00

सोमबारी महाराज *हरिश्चन्द्र मिश्र* 50.00

सन्त रैदास *श्रीमती पद्मावती झुनझुनवाला* 60.00

सूर्य विज्ञान प्रणेता योगिराजाधिराज
स्वामी विशुद्धानन्द परमहंसदेव :
जीवन और दर्शन *नन्दलाल गुप्त* 140.00

पुराण पुरुष योगिराज श्रीश्यामाचरण लाहिड़ी
सत्यचरण लाहिड़ी 120.00

योग एवं एक गृहस्थ योगी :
योगिराज सत्यचरण लाहिड़ी
शिवनारायण लाल 150.00

योगिराज तैलंग स्वामी *विश्वनाथ मुखर्जी* 40.00

ब्रह्मर्षि देवराहा-दर्शन *डॉ० अर्जुन तिवारी* 50.00

भारत के महान योगी (भाग 1-10)
5 जिल्द में *विश्वनाथ मुखर्जी (प्रत्येक)* 100.00

भारत की महान साधिकाएँ *विश्वनाथ मुखर्जी* 40.00

महाराष्ट्र के संत-महात्मा *ना०वि० सप्रे* 120.00

पूर्वांचल के संत महात्मा *परागकुमार मोदी* 70.00

कथा त्रिदेव की *रामनगीना सिंह* 50.00

उत्तिष्ठ कौन्तेय *डॉ० डेविड फ्राली,*
अनु० केशवप्रसाद कायाँ 150.00

सब कुछ और कुछ नहीं *मेहेर बाबा* 60.00

सृष्टि और उसका प्रयोजन *मेहेर बाबा* 65.00

वाग्विभव *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 200.00

हिन्दी ज्ञानेश्वरी *अनु० ना० वि० सप्रे* 180.00

श्रीमद्भगवद्गीता (3 खण्डों में)
श्री श्यामाचरण लाहिड़ी 375.00

जपसूत्रम (प्रथम खण्ड व द्वितीय खण्ड)
स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती (प्रत्येक) 150.00

वेद व विज्ञान
स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती 180.00

आपका पत्र

'भारतीय वाङ्मय' एक पत्र नहीं साहित्य से बँधी सूचनाओं का प्रामाणिक दस्तावेज है। आपके सम्पादकीय अज्ञात अछूते-अनजाने विषयों को स्पष्ट करते हैं। सचमुच मुझे तो यह पता ही नहीं था कि आपका व्यक्तित्व पूर्णत: साहित्यिक है। इस नए पक्ष के उद्घाटन में आपको और अधिक आत्मीय बना दिया। आप लिखते रहें। **— प्रो० कल्याणमल लोढ़ा**

पूर्व कुलपति, जोधपुर विश्वविद्यालय
भूतपूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
कलकत्ता विश्वविद्यालय

❑ ❑ ❑

'भारतीय वाङ्मय' के दिसम्बर 2002 के अंक में प्रकाशित 'उच्च शिक्षा का भविष्य' अत्यन्त सारगर्भित एवं तथ्यपरक विश्लेषण है। आपने छोटे से लेख में शिक्षा की दिशाहीनता, संवेदनशून्यता आदि पर गम्भीर टिप्पणी की है। वस्तुत: देश के नीति-नियामकों के पास उच्च शिक्षा पर सोचने-विचारने का न तो समय है और न सोच ही। आज विज्ञान एवं वाणिज्य जैसे संकायों में दस प्रतिशत छात्र भी उपस्थित नहीं होते, कला की तो बात जाने दीजिए। एम०ए० का छात्र केवल प्रवेश के बाद परीक्षा देने ही पहुँचता है। वह गेस पेपर के अतिरिक्त नहीं जानता कि मूल पुस्तकों के क्या नाम हैं। छात्रसंघ का कोई भी पदाधिकारी पिछले एक दशक से कक्षा में नहीं आया है, उसका उद्देश्य शहर से चंदा वसूलना और राजनीतिक लाभ उठाना भर है। विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों के अधिकांश प्रवक्ता, रीडर पठन-पाठन से कोसों दूर हैं, यदि उन्हें यू०जी०सी० टेस्ट में बैठा दिया जाये, तो 90 प्रतिशत फेल हो जायेंगे। पाठ्यक्रम में क्या पढ़ाया जाये, प्रश्नावली कैसी हो, छात्र किस तरह समग्र पाठ्यक्रम तैयार करने को मजबूर हो, मूल्यांकन पद्धति में कैसे सुधार हो, वे जानते ही नहीं हैं, यहाँ तक कि स्नातक का पाठ्यक्रम तैयार करते समय वे कभी भी इंटर के पाठ्यक्रम को नहीं देखते। आपकी पत्रिका एक संग्रहीय और रोचक दस्तावेज है। **— डॉ० ब्रजमोहन गुप्त**

रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी
राजकीय पी०जी० कालेज, काशीपुर (उत्तरांचल)

❑ ❑ ❑

'भारतीय वाङ्मय' का दिसम्बर माह का अंक प्राप्त हुआ। उच्च शिक्षा के भविष्य पर लिखा आपका सम्पादकीय अत्यन्त प्रासंगिक एवं सटीक है। आपने भारतीय शिक्षा पद्धति की मूलभूत खामियों को सही रेखांकित किया है। बधाई।

डॉ० कृष्णगोपाल शर्मा

रायसर हाउस, जयपुर

❑ ❑ ❑

'भारतीय वाङ्मय' पत्रिका सचमुच प्रेरणादेय है। सभी अंचल क्षेत्रों से इस प्रकार की हिन्दी पत्रिका हो तो? खास करके हिन्दीतर प्रदेश आज नहीं के बराबर हैं क्योंकि सभी प्रदेशों से आज तो हिन्दी के प्रकाशन ढेर से हो रहे हैं। पर, पता कैसे चले? मैं आशा रखता हूँ कि 'भारतीय वाङ्मय' से इस प्रकार का योग प्राप्त होगा ही।

डॉ० रजनीकान्त जोशी

अहमदाबाद

❑ ❑ ❑

स्व० भाई 'सुमन'जी पर आपका वक्तव्य एक सार्थक दस्तावेज है। इसे तो रखना ही है। ऐसा स्मरण आता है कि एक बार वे कुछ समय तक यहाँ रहकर लौट गए थे। पुन: आए तब तक तो सम्भवत: आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का निधन हो चुका था। आपको भविष्य में हमलोग उद्धृत करेंगे अत: इस ऐतिहासिक तथ्य को ठीक-ठीक दर्ज हो जाना चाहिए। स्वयं 'सुमन'जी अपने को आचार्य पं० केशवप्रसादजी मिश्र का विद्यार्थी मानते थे, जन्मभर मानते रहे। उनकी चर्चा करते ही भावुक हो जाते।

वर्षों बाद पं० गोविन्द मालवीयजी (भूतपूर्व कुलपति, का०हि०वि०) से आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की काशी में नियुक्ति के विषय बार-बार जो वृत्तांत सुना, वह इस प्रकार है : विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष के पद के लिए खोज चल रही थी। उस समय पं० गोविन्द मालवीयजी ने राजर्षि पुरुषोत्तमदासजी टंडन एवं आचार्य नरेन्द्रदेवजी से सलाह ली। आचार्यजी ने द्विवेदीजी को कुछ पहले लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति पद से मानद डाक्टरेट की उपाधि प्रदान की थी। स्वाभाविक ही है, मानद मिलते ही उक्त दोनों महानुभावों ने एक स्वर से द्विवेदीजी के नाम की संस्तुति की, स्थानीय वातावरण गरम होने लगा। इस पर मेरे पूज्य पिताजी (स्व० रायकृष्णदासजी) ने उन्हें पत्र द्वारा अयाचित सलाह दी कि यहाँ के दलदल से दूर रहें। द्विवेदीजी कुछ दिनों तक ऊहापोह में थे, पर दृढ़ निश्चयी थे। उन्होंने मेरे पिताजी को लिखा कि अब वचनबद्ध हो चुका हूँ। कोई आश्चर्य नहीं कि द्विवेदीजी का उक्त पत्र भारत कला भवन संग्रह में सुरक्षित हो। इस प्रकार द्विवेदीजी के काशी आगमन में किसी का भी हाथ न था। **— राय आनन्दकृष्ण**

❑ ❑ ❑

'भारतीय वाङ्मय' का दिसम्बर 02 अंक मिला। धन्यवाद। कृपया इसमें त्रुटियों का भूल सुधार करें। पृष्ठ चार पर श्री शिवमंगल सिंह 'सुमन' का स्मृतिशेष समाचार प्रकाशित हुआ है। इसमें मुझे कहना है कि सुमनजी डूँगरपुर में नहीं जन्में। वे उन्नाव जिले के बारा सगवर के निकट 'झगरपुर' में जन्में थे। वहाँ उनका पैतृक भवन आज भी है। परिवार के बन्धु रहते हैं। दूसरी बात, उन्नाव जिले में सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' भी जन्में थे। जिनका नाम नहीं दिया गया। सुमनजी ने अटलजी को नहीं पढ़ाया। अटलजी दूसरी कक्षा में थे। सुमनजी उसी विद्यालय में शिक्षक जरूर थे। अटलजी ने सदैव सुमनजी की ओजपूर्ण कविताओं की सराहना की है। **— विजयप्रकाश त्रिपाठी**

प्रधान सम्पादक
जयतु हिन्दू विश्व (मासिक), कानपुर

❑ ❑ ❑

'भारतीय वाङ्मय' पहली बार पढ़ने का सौभाग्य हुआ। यह साहित्य का दस्तावेज है। बहुत कुछ जानने और सीखने के लिए।

सैयद आफताब हुसेन

मुम्बई

म०म०पं० गोपीनाथ कविराज के अध्यात्मपरक ग्रन्थ

भारतीय धर्म साधना	80.00
क्रम-साधना	80.00
अखण्ड महायोग	80.00
श्रीकृष्ण प्रसंग	250.00
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्व कथा	130.00
शक्ति का जागरण और कुण्डलिनी	100.00
श्री साधना	50.00
दीक्षा	80.00
सनातन-साधना की गुप्तधारा	100.00
साधु दर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 1, 2)	80.00
साधु दर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 3)	50.00
मनीषी की लोकयात्रा (म०म०पं० गोपीनाथ कविराज का जीवन दर्शन)	300.00
कविराज प्रतिभा	64.00
ज्ञानगंज	60.00
प्रज्ञान तथा क्रमपथ	80.00
तन्त्राचार्य गोपीनाथ कविराज और योग-तन्त्र साधना	50.00
परातंत्र साधना पथ	40.00
भारतीय संस्कृति और साधना (भाग 1)	200.00
भारतीय संस्कृति और साधना (भाग 2)	120.00
अखण्ड महायोग का पथ और मृत्यु विज्ञान	40.00
काशी की सारस्वत साधना	35.00
भारतीय साधना की धारा	30.00
तांत्रिक वांगमय में शाक्त दृष्टि	100.00
तांत्रिक साधना और सिद्धान्त	120.00

स्मृति-शेष

प्रो० राजपति दीक्षित का निधन

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पूर्व प्राध्यापक वयोवृद्ध विद्वान् **प्रो० राजपति दीक्षित** का 19 दिसम्बर 2002 को निधन हो गया। उनका जन्म वाराणसी जिले में 20.11.1915 को हुआ था। 'तुलसीदास और उनका युग' उनकी विशिष्ट रचना है। इसके तीन संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। महामना मदनमोहन मालवीय और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की अंतरंगता प्राप्त विद्वानों में उनकी गणना थी।

हम अपनी भाषा से नहीं जुड़ सके

अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम भाषा है। भाषा ही एक दूसरे को जोड़ती है। भाषा की देवी सरस्वती व मातृभूमि का वंदन करना हमारी संस्कृति का एक हिस्सा है, फिर भी कुछ लोग इसका विरोध करते हैं। मातृभाषा या भारतीय भाषा का पहचान खोने वाला अपनी संस्कृति व पहचान खो देगा। पाश्चात संस्कृतियाँ हमारी सभ्यता, संस्कार को तोड़ना चाहती हैं। हमें अपनी भारतीय भाषाओं की जड़ इतनी मजबूत कर देना है कि कोई भी बाह्य शक्ति हानि न पहुँचा सके।

— प्रो० बलवंत जानी
कुलपति, गुजरात विश्वविद्यालय एवं
अध्यक्ष भारतीय भाषा परिषद

❑ ❑ ❑

हिन्दी की तेरह कहानियों पर टी०वी० सीरियल

जयशंकरप्रसाद की मछुआ, गुलेरी की कहानी बुद्ध का काँटा, भगवतीचरण वर्मा की दो बांके, जैनेन्द्रकुमार की पाजेब और पत्नी, धर्मवीर भारती की गुलकी बन्नो, अमरकान्त की डिप्टी कलेक्टरी।

❑ ❑ ❑

यशपाल जन्म शताब्दी

हिन्दी के जाने माने आलोचक डॉ० नामवर सिंह ने 15 दिसम्बर 2002 को बताया कि कथाकार यशपाल को उनके महत्त्वपूर्ण उपन्यास 'झूठा सच' पर पुरस्कार मिला होता, लेकिन नही मिला क्योंकि तब अकादमी के अध्यक्ष थे पं० जवाहरलाल नेहरू। उनके पास पहुँचे तमाम बड़े लोगों ने अभियान सा छेड़ रखा था कि इस उपन्यास में काफी कुछ आपके खिलाफ है, साथ ही अश्लीलता के पुट हैं। अभियान छेड़ने वाले वे लोग थे, जो कभी प्रगतिवादी थे। नेहरू के पास अभियान छेड़ने वालों में एक वे भी थे जिन्होंने अपनी पुस्तक, 'संस्कृति के चार अध्याय' पर नेहरू से भूमिका लिखवाई और पुरस्कार लिया। अकादेमी का पुरस्कार यशपाल को नहीं, सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय को उनकी पुस्तक 'आंगन के पार द्वार' पर मिला।

इस ऐतिहासिक भूल का हवाला देते हुए नामवर सिंह ने कहा कि तभी उन्होंने ऐसी भूलों को दुरुस्त करने का संकल्प लिया। वे अकादेमी में 1971 में चुने गए। तब से 1982 तक वे सक्रिय रहे। उस समय शिवमंगल सिंह 'सुमन' साथ थे। देर हो चुकी थी। फिर भी यशपाल को उनकी कृति, 'मेरी-तेरी उसकी बात' पर अकादेमी पुरस्कार दिया गया। यह कमजोर रचना थी लेकिन पुरस्कार देना जरूरी था। तीन दिसम्बर उनका जन्मदिन था। उसके आस-पास ही पुरस्कार की घोषणा हुई थी। लखनऊ के मनचलों ने उन्हें गुमराह किया कि वे पुरस्कार न लें, पर यशपाल राजी न हुए। अकादेमी के साथ उनकी लुकाछिपी इस मायने में जारी रही कि फरवरी 1977 में उन्हें पुरस्कार मिलना था पर वे उसे लेने न जा सके। नामवर सिंह ने अकादेमी के अपने उस दौर को याद करते हुए कहा कि तभी कवि शमशेर को भी साहित्य अकादेमी पुरस्कार मिला।

लखनऊ में 15 दिसम्बर को नगर निगम सभागार में तीन की बजाय 15 से यशपाल की जन्म शताब्दी की शुरुआत को उन्होंने उचित बताया। कहा कि हिमाचल में हमीरपुर उनका जन्म स्थान रहा है, वहाँ से अलग यहाँ, समारोह की शुरुआत का अलग महत्त्व है। लखनऊ में वे इतने समय तक रहे उनकी जन्मशती का यह पहला आयोजन है। सही शुभारम्भ लखनऊ में ही सम्भव था जिसे यशपाल के पुत्र आनन्द, उपन्यासकार श्रीलाल शुक्ल और उमेशकुमार चौहान जैसे साहित्य के अनुरागियों ने किया। यह काम साहित्य अकादेमी नहीं कर सकी। अब लगता है कि समापन भी यहीं होगा। इस शहर में उनके नाम पर सभागार है, फिर भी यह सच है कि यशपाल जैसा क्रान्तिकारी और उपन्यासकार कभी, किसी संस्था का मोहताज नहीं रहा।

कार्यक्रम की आयोजक संस्था यशपाल जन्मशताब्दी समारोह समिति के अध्यक्ष साहित्यकार श्रीलाल शुक्ल हैं।

नए मील का पत्थर पार हुआ,
कितने पत्थर शेष, कोई नहीं जानता,
इसलिए उम्र का बढ़ना भी त्योहार हुआ,
नए मील का पत्थर पार हुआ।

— अटलबिहारी वाजपेयी
25 दिसम्बर, 79वें जन्मदिवस पर

न्यूक्लियस सोसाइटी द्वारा आयोजित कृति चर्चा कार्यक्रम में वक्तव्य देते हुए सोसाइटी के मुख्य संयोजक डॉ० कृष्णगोपाल शर्मा। मंच पर आसीन हैं (दाएँ से) कृतिकार आर०डी० सैनी (निदेशक, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी), प्रोफेसर श्यामलाल (कुलपति, राजस्थान विश्वविद्यालय), प्रोफेसर रमेश के० अरोड़ा (सुप्रसिद्ध शिक्षाविद्) एवं डॉ० ललित के० मेहता (संयोजक-कार्यक्रम)

पूछिए कितना खर्च हुआ ?

समीक्षा गोष्ठी

न्यूक्लियस सोसाइटी ऑफ टीचर्स, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर द्वारा विगत 27 नवम्बर को डॉ० आर०डी० सैनी, निदेशक, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, की सद्य: प्रकाशित पुस्तक **पूछिये कितना खर्च हुआ है ?** पर कृतिचर्चा एवं समीक्षा-गोष्ठी कार्यक्रम का आयोजन हुआ।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर श्यामलाल थे तथा सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् प्रोफेसर रमेश के० अरोड़ा कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे थे। कृतिचर्चा में अनेक शिक्षाविदों, साहित्यकारों तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं ने भाग लिया, इनमें प्रमुख वक्ता थे— प्रोफेसर नरेश दाधीच, डॉ० सरस्वती माथुर, डॉ० राजाराम भादू, प्रोफेसर पी०के० कोटिया, डॉ० रूपा मंगलानी, श्री प्रेमकृष्ण, डॉ० रचनीकान्त पंत, डॉ० भानावत एवं सुश्री कविता श्रीवास्तव। कार्यक्रम का संचालन डॉ० ललित के० मेहता ने किया।

सोसायटी के मुख्य संयोजक डॉ० कृष्णगोपाल शर्मा (एसोशिएट प्रोफेसर, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय) ने अतिथियों का स्वागत करते हुए न्यूक्लियस सोसायटी, कृतिकार डॉ० आर०डी० सैनी एवं उनकी कृति 'पूछिये कितना खर्च हुआ है?' का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया। समीक्षाधीन कृति 'पूछिये कितना खर्च हुआ है?' राजस्थान की वर्तमान सरकार की सकारात्मक भूमिका को केन्द्र में रखते हुए, सूचना के अधिकार के प्रति जन जागरूकता के आह्वान का एक सशक्त साहित्यिक दस्तावेज है।

पुस्तक समीक्षा

मांदर बज उठा

हिन्दी नाट्यकर्म की परिधि अब व्यापक होती जा रही है, जो रंगकर्म के समग्र अनुभव के साथ ही इससे भी स्पष्ट हुआ है कि काव्य-नाटक, गीति-नाट्य, एकांकी-नाट्य आदि विविध नाट्य-रूपों के साथ ही रेडियो नाटक लिखने की प्रवृत्ति भी जोर पकड़ती जा रही है। रेडियो नाटक यद्यपि अपने स्वरूप एवं संरचना में नाट्य होने की केवल एक शर्त ही पूरी करता है तथापि लोकानुरंजन और लेखन तथा सम्प्रेषण की सुविधा की दृष्टि से यह लोक प्रचलित हुआ है। हिन्दी के अनेक नाटक अपनी प्रस्तुति और प्रकाशन से पूर्व रेडियो नाटक के रूप में भी प्रसारित हुए हैं, जिन्हें बाद में रंगावयवों की सहायता से दृश्य की विशिष्टता प्रदान कर मंचीय नाटक का रूप दिया गया है। ऐसी स्थिति में, सहज सम्प्रेषणीयता और शिल्पगत सुविधा के वैशिष्ट्य के साथ अनिन्दिता कृत 'मांदर बज उठा' रेडियो नाट्य-संग्रह का प्रकाशन एक गम्भीर प्रयास साबित हुआ है; क्योंकि इस संग्रह के अधिकांश नाटकों का कई-कई बार विविध केन्द्रों से प्रसारण भी हो चुका है, जो वस्तुगत सौन्दर्य और ध्वनि प्रभाव की क्षमता को सूचित करता है।

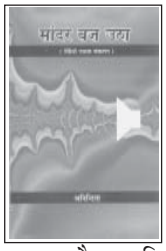

परिवेश की संवेदनाओं और समस्याओं की सूक्ष्माभिव्यक्ति के साथ ही मात्र मनोरंजन के सीमित दायरे से बाहर अनिन्दिता के इन नाटकों में यथार्थ की भंगिमाएँ ओर मूल्य-विघटन की अनुगूँज के साथ ही जीवन के कुछ गहरे व्यावहारिक रंगों का आभास भी है। इसलिये इस संकलन में समय, व्यक्ति और समाज से जुड़ी वास्तविक चिन्ताएँ अभिव्यक्त हुई हैं। वैसे भी, समसामयिक यथार्थ से जुड़ी रचनाएँ प्रासंगिक होती ही हैं। इन नाटकों में पारम्परिक मूल्यों की टूटन एवं वैचारिक बदलाव, मानव मन की गहराईयों को मापने का प्रयास, जीवनानुभव से निर्मित नाट्य-संसार, पाश्चात्य प्रभावों से युवाओं और महिलाओं की विचारधारा में परिवर्तन, दिखावा और नशीले पदार्थों का सेवन, सम्बन्धों की उलझी कड़ियों के साथ ही अन्त: बाह्य संवेदनाओं की अभिव्यक्ति जैसी विशेषताएँ सहज ही मिल जाती हैं।

जनजातीय समाज में स्वेच्छा से जीवन-साथी के चुनाव की अनुकरणीय पद्धति, हमारे तथाकथित सभ्य समाज में प्रचलित दहेज प्रथा की गलत परम्परा का उद्घाटन, समाज की मुख्य धारा से जोड़कर अपंगों के सर्वांगीण विकास की समस्या, झूठी शान बघारने और दिखावा में विश्वास करने वाली महिलाओं की शोचनीय स्थिति, युवावर्ग में नशे की गलत आदत और उसके दुष्परिणामों का अंकन, अंधविश्वासों की जड़ों पर प्रहार, पर्यावरण की विकट समस्या और प्रदूषण के जहर से बचने का संदेश, पाश्चात्य फैशन के बढ़ते आकर्षण, बच्चों के मानसिक विकास के लिये बाधक माता-पिता की दमित इच्छायें, शिक्षित समाज में भी ढोंग, पाखण्ड और पूजा-पाठ की समस्या और नगर के आडम्बरपूर्ण माहौल तथा कृत्रिम जीवन की यथार्थता को नाट्यवस्तु में समाहित किया गया है। अनिन्दिता के इन रेडियो-नाटकों की वस्तु समकालीन जीवन-संदर्भों से संबद्ध है। दो-एक नाटकों को छोड़कर शेष नाटकों में उठायी गयी समस्याओं को लेकर कई पूर्णकालिक मंचीय नाटक भी लिखे गये हैं, यद्यपि इनकी संख्या अभी बहुत कम है। लेखिका ने नये विषयों और समस्याओं को न उठाकर भी विषय की नयी दृष्टि से प्रस्तुति की शैली का परिचय दिया है।

रेडियो नाटक में दृश्य-बिम्ब का निर्माण भी ध्वनि प्रभाव और संवादों द्वारा ही करना पड़ता है; क्योंकि स्वराभिनय की अनिवार्यता के कारण वहाँ वस्तु का सम्प्रेषण पहले ध्वनि से और तब मन-मस्तिष्क से उससे निर्मित दृश्य-चित्रों के माध्यम से होता है। वस्तु-वैविध्य और ध्वनि से उसके दृश्य बिम्ब के निर्माण की कला की दृष्टि समीक्ष्य नाटक लेखिका की रेडियो नाट्य-कला की परिपक्वता के सूचक हैं। सभी नाटकों में मंचीय नाटक होने की पूरी सम्भावनाएँ और विषय के विस्तार में जाने के पर्याप्त अवसर हैं तथा लेखिका में भी सार्थक मंचीय नाटक लिखने की सृजनात्मक ऊर्जा एवं आन्तरिक तड़प है। भविष्य में उनसे सार्थक और गम्भीर नाट्य-रचनाओं की आशा करना अनुचित नहीं लगता।

— डॉ० लवकुमार लवलीन
'छायानट' से

मांदर बज उठा
अनिन्दिता
मूल्य : 150 रुपये

जैन कला तीर्थ : देवगढ़
प्रो० मारुतिनन्दनप्रसाद तिवारी
डॉ० शान्तिस्वरूप सिन्हा

मूल्य : 350.00

भारतीय-कला के इतिहास में उत्तर प्रदेश के ललितपुर जिले में स्थित देवगढ़ का विशिष्ट स्थान है। यहाँ कला का अजस्र प्रवाह प्रागैतिहासिक काल से निरन्तर 16वीं-17वीं शती ई० तक हुआ है, जिसमें वैदिक-पौराणिक और जैन दोनों ही परम्पराओं के कलावशेष हैं। **जैन कला-तीर्थ : देवगढ़** शीर्षक प्रस्तुत पुस्तक में देवगढ़ की जैन कला के सभी पक्षों का पहली बार विस्तारपूर्वक अध्ययन हुआ है। जैन प्रतिमाओं और उनके प्रतिमालक्षण की व्याख्या कलात्मक और शास्त्रीय दोनों ही दृष्टियों से की गयी है। इस पुस्तक में देवगढ़ की तीर्थंकर, यक्ष-यक्षी, भरत-मुनि, बाहुबली, सरस्वती, क्षेत्रपाल एवं आचार्य और उपाध्याय मूर्तियों से सम्बन्धित नवीन सर्जनाओं को भी रेखांकित किया गया है। प्रारम्भ के अध्यायों में देवगढ़ के दशावतार एवं वराह मन्दिरों सहित अन्य वैदिक-पौराणिक परम्परा की कला-सामग्री पर भी सम्यक् दृष्टि से विचार किया गया है। पुस्तक में 82 चित्र फलक है।

मध्ययुगीन काव्य प्रतिभाएँ
डॉ० रामकली सराफ

सजिल्द : 120.00 अजिल्द : 80.00

मध्ययुग में भक्ति और रीति दो काव्यधाराएँ समानरूप से प्रवाहित हैं। दोनों की दो दिशाएँ हैं। भक्त कवियों में कबीर, जायसी, सूर, मीरा, तुलसी ने अपनी रचनाओं में तत्कालीन सामाजिक विरोध और समन्वय को अभिव्यक्त किया। इन कवियों ने ब्रह्मकालीन आनन्दावस्था को प्रेम के साथ जोड़कर देखा। जीवन की सच्ची परिस्थितियों को सीधे-सीधे आत्मसात् कर मार्मिक अंकन करना भक्त कवियों की विशेषता है।

रीतिकालीन काव्य परम्परा हिन्दीभाषी प्रदेश में सामन्तवर्ग की विशिष्ट सांस्कृतिक परम्परा है। तुलसीदास के समय से ही एक नये ढंग का जातीय सांस्कृतिक विचलन उपस्थित होने लगा था। इस प्रकार भक्तिकाल से ही रीतियुग के बीच सूत्र मिलने लगे थे। 'राधा कन्हाई सुमिरन' के बहाने भक्ति ने रीति का रूप ग्रहण कर लिया।

केशव, बिहारी, मत्तिराम, भूषण, देव, पद्माकर, घनानन्द, द्विजदेव, भारतेन्दु, रत्नाकर रीति परम्परा के प्रमुख कवि हैं, जिन्होंने काव्यशास्त्रीय लक्षण ग्रन्थों में आबद्ध हो काव्य-कौशल अभिव्यक्त किया। इनके काव्य में उक्ति भंगिमा, अतिरंजित चमत्कारयुक्त आलंकारिक चित्रण है।

भक्ति और रीति के प्रमुख कवियों और उनके काव्य का अध्ययन इस पुस्तक की विशेषता है। साहित्य के अध्येताओं के लिए महत्त्वपूर्ण।

स्वामी दयानन्द जीवन गाथा
प्रो० डॉ० भवानीलाल भारतीय

मूल्य : 120.00

स्वामी दयानन्द सत्यान्वेषी थे। किसी मूल्य पर, किसी भी प्रलोभन में पड़कर उन्होंने सत्य का पथ नहीं छोड़ा। उन्हें जो-जो असत्य लगा उसे त्याग दिया और जब जो सत्य लगा उसे स्वीकार कर लिया। इस दृष्टि से स्वामीजी का जीवन सदा

प्रगतिशीलतामय रहा है। डॉ० भारतीयजी ने ऋषि के जीवनचरित में इस प्रगतिशीलता का सदा ध्यान रखा है, अपनी लेखकीय दृष्टि से कभी ओझल नहीं होने दिया।

डॉ० भारतीय ने ऋषि के जीवनचरित पर अति सुन्दर, सर्वांगपूर्ण रचना की है। इनका महर्षि दयानन्द का राजा राममोहन राय और स्वामी विवेकानन्द का तुलनात्मक अध्ययन भी अनूठा है।

डॉ० भवानीलाल भारतीय में इस महान् संन्यासी का जीवनचरित लिखने की अद्‌भुत क्षमता है। 40 वर्षों से भी अधिक का श्रद्धा भक्ति समन्वित स्वाध्याय उनका संबल है। सम्भवत: स्वामी दयानन्द पर लिखित एवं एकत्रित साहित्य सर्वस्व का अध्ययन और उसका अधिकारपूर्वक मनन चिन्तन एवं संग्रह डॉ० भारतीय के स्पृहणीय सौभाग्य का विरल स्वरूप है।

संस्कृत के प्रतीकात्मक नाटक
एक अध्ययन
डॉ० आशारानी त्रिपाठी

मूल्य : 225.00

साहित्य सृजनकर्ता के संवेदनशील, सरस एवं बहुआयामी व्यक्तित्व की भाषिक अभिव्यक्ति है। साहित्यकार की प्रतिभा एवं व्युत्पत्ति है। साहित्यकार की प्रतिभा एवं व्युत्पत्ति सम्पन्न बौद्धिक चेतना प्रतिक्षण अभिव्यक्ति के नवीन परन्तु प्रभावशाली माध्यमों का अन्वेषण करती रहती है। दर्शन के गूढ़ तत्त्वों को नाट्य विधा के चटकीले इन्द्रधनुषी रंगों में डुबो कर प्रस्तुत करना भी रचनाकार का एक ऐसा ही प्रयत्न है।

संस्कृत के प्रतीकात्मक नाटक अपनी दार्शनिक विषयग्राह्यता एवं नाट्य विधानों के अनोखे निबन्धन के कारण सम्पूर्ण भारतीय साहित्य में एक विशिष्ट स्थान रखते हैं। सांसारिक प्रपञ्चों में जकड़े, रागद्वेषादिसंमूढ एवं दु:खों से भयभीत मानव को उसके जीवन के परम लक्ष्य 'मोक्ष' का स्मरण कर शाश्वत सुखप्राप्ति के लिए प्रेरित करना ही इन नाटकों का मुख्य उद्देश्य है। दु:खार्त श्रमार्त एवं तपस्वियों को भी विश्रांति प्रदान करने वाले ये नाटक मानवीय भावनाओं के गूढ़तम गह्वर में प्रवेश कर उसमें चलने वाले प्रवृत्ति-निवृत्ति के अन्तर्द्वन्द्व को विभिन्न पात्रों के रूप में उपस्थित करके सूक्ष्म दार्शनिक विचारों को स्थूल एवं बोधगम्य रूप प्रदान करते हैं। दर्शन के ब्रह्म, जीव, जगत जैसे दुरूह विषयों की प्रस्तुति समस्त नाटकीय विधानों को दृष्टि में रखकर के ही की गयी है। रचनाकारों का यह प्रयत्न मानवीय मनोविज्ञान की यथार्थता के तह तक पहुँच कर सिद्धान्त एवं व्यवहार के मध्य के अन्तर को दूर करने में सक्षम है। नाटक श्रेय प्राप्ति के उपायों का ज्ञापक है। प्रतीकात्मक नाटक नाट्यविद्या के इन उद्देश्यों को चित्रित करने वाले बहुरंगी फलक है।

भारतीय सामाजिक एवं आर्थिक चिंतन
कृष्णकुमार सोमानी

मूल्य : 75.00

पुस्तक प्राचीन काल से लेकर वर्तमान की सामाजिक और आर्थिक स्थितियों का विश्लेषण करने का प्रयास है। भारत की संस्कृति पर विदेशी सभ्यताओं के अतिक्रमण पर क्षोम पुस्तक के प्राय: हर पृष्ठ पर झलकता है।

हजारों वर्ष पूर्व की भारतीय संस्कृति, सभ्यता तथा सामाजिक स्थिति समृद्ध, आदर्श और विश्वभर में अग्रणी थी। दुर्बलता थी तो आत्म-बल पर विश्वास न होने की। तभी तो सोमनाथ पर बर्बर हमला होता रहा और तथाकथित भगवान-भक्त स्वयं उसकी रक्षा के लिए खड़े न होकर अज्ञात शक्ति की गुहार लगाते रह गये।

हजारों वर्ष से भारत अपनी संस्कृति पर अभिमान करता आया है किन्तु उसकी रक्षा हो पाना तो दूर बाह्य संस्कृतियों के अतिक्रमण से दूषित होती रही है। लेखक ने अपने चिंतन में इस तथ्य को विशद रूप से चित्रित किया है।

समय के साथ महान संस्कृति अप-संस्कृति बन चुकी है और इसका प्रभाव सिर्फ सामाजिक क्षेत्र पर ही नहीं आर्थिक क्षेत्र पर भी भीषण रूप में पड़ा है। लेखक ने स्पष्ट तौर पर भले ही उल्लेख नहीं किया किन्तु उसका संकेत इसी ओर है कि भारत की सहनशीलता ने ही उसे लचर बनाया है। उसकी अस्मिता आभाहीन हो चुकी है और हम अपनी प्राचीन समृद्धि से वंचित होकर बाहर से समृद्धि के लिए दूसरों का मुँह ताकने लगे हैं। हमारा आत्मगौरव खोखला है।

लेखक का यह चिंतन यदि भारतीय जनमानस को कुरेद सका तो देश वास्तविक प्रगति के पथ पर दूर तक जा सकेगा।

इसमें शक नहीं कि लेखक का अध्ययन गहरा है और उसके चिन्तन में वह गहराई झलकती है, पर यदि एक पुस्तक को ही महासागर बना देने का यह प्रयास इस तथ्य से सतही बन गया है कि इसमें एक साथ कई विषय समेटे गये हैं जो मूल विषय से पूरा न्याय करता प्रतीत नहीं होता।

— दीप बंसल

नवीनतम हिन्दी पुस्तकें

उपन्यास

नीम का पेड़	*राही मासूम रजा*	125.00
आनन्द वर्षा	*सुधीर कक्कड़*	150.00
विढार	*भालचन्द्र नेमाड़े*	295.00
जुस्तजू-ए-निहाँ	*जितेन्द्र भाटिया*	150.00
परदेसिया	*बुद्धदेव गुहा*	125.00

पत्रकारिता पर नई पुस्तक
नई प्रस्थापनाओं के साथ

हिन्दी पत्रकारिता का नया स्वरूप

वरिष्ठ पत्रकार-साहित्यकार बच्चन सिंह
की
नई कृति की प्रमुख विशेषताएँ

- समाचारपत्र-पत्रिकाओं की अशुद्धियों पर पहली बार विचार और उनका वैज्ञानिक वर्गीकरण।
- सम्पादक नामक संस्था का अवमूल्यन और सम्पादक की नई परिभाषा।
- समाचार पत्रों की भाषा पर महत्त्वपूर्ण-विचार।
- अनुवाद का समाचार पत्रों की भाषा पर दुष्प्रभाव।
- आधुनिक प्रौद्योगिकी और पत्रकारिता के सम्बन्धों पर विचार।

पत्रकारिता के छात्रों, अध्येताओं तथा पत्रकारों के लिए ढेर सारी उपयोगी सामग्री

नई शास्त्रीय और वैज्ञानिक दृष्टि
विषयों के प्रति नया दृष्टिकोण

मूल्य : 250.00

चूल्हा और चक्की	*ओमप्रकाश दत्त*	125.00
पीठ पीछे का आँगन	*अनिरुद्ध उमट*	125.00
शर्मनाक	*सलीम आजाद*	125.00
इन्हीं हथियारों से	*अमरकान्त*	495.00
सीधा-सादा रास्ता	*रांगेय राघव*	350.00
सूत्रधार	*संजीव*	250.00
अपनी गवाही	*मृणाल पाण्डे*	175.00
पांचजन्य	*गजेन्द्रकुमार मित्र*	395.00
उत्तर बायाँ है	*विद्यासागर नौटियाल*	250.00
नानी	*द्रोणवीर कोहली*	300.00
कथा कहो कुन्ती माई	*मधुकर सिंह*	100.00
राग विराग	*श्रीलाल शुक्ल*	100.00
समय साक्षी है	*हिमांशु जोशी*	125.00

आलोचना

आधुनिक साहित्य	*नंददुलारे वाजपेयी*	500.00
निर्मल वर्मा और उत्तर-उपनिवेशवाद	*सुधीश पचौरी*	295.00
मुक्तिबोध : कविता व जीवन-विवेक	*चंद्रकांत देवताले*	295.00
आधुनिक नाटक का अग्रदूत : मोहन राकेश	*डॉ० गोविन्द चातक*	225.00
सरहपा और कबीर	*कौशलेन्द्र पाण्डेय*	250.00
भक्ति काव्य समीक्षा	*रामस्वरूप चतुर्वेदी*	120.00
अज्ञेय काव्य तितीर्षा	*नन्दकिशोर आचार्य*	150.00

कहानी

सम्पूर्ण कहानियाँ	*भगवतीचरण वर्मा*	350.00
नरक ले जाने वाली लिफ्ट	*अनु. राजेन्द्र यादव*	250.00
विषम राग	*अरुणप्रकाश*	350.00
अनसुनी आवाजें	*हर्ष मन्दर*	195.00
बीस रुपए	*दया पवार*	95.00
गुलमोहर फिर खिलेगा	*सं० कमलेश्वर*	200.00

नायक खलनायक विदूषक
(सम्पूर्ण कहानियाँ) *मन्नू भंडारी* 450.00

कविता

मेरा घर *त्रिलोचन शास्त्री* 95.00
इन दिनों *कुँवर नारायण* 150.00
लिखने का नक्षत्र *मलय* 150.00
समय का हिसाब *वंदना देवेन्द्र* 150.00
थोड़ी बारिश दो *अमरेन्द्र नारायण* 125.00
इस भँवर के पार *शशिशेखर शर्मा* 125.00
लिखने का नक्षत्र *मलय* 150.00
इबारत से गिरी यात्राएँ *अशोक वाजपेयी* 140.00

संस्मरण/निबन्ध

भारत की आत्मा *गाय सोर्मन* 195.00
तालिबान अफगान और मैं
सुष्मिता बंद्योपाध्याय 150.00
मेरे साक्षात्कार *केदारनाथ सिंह* 200.00
लोकनायक समर्थ गुरु रामदास
डॉ० सच्चिदानंद परलीकर 175.00
अरुणाचल यात्रा *कृष्णनाथ* 140.00

इतिहास

इतिहासकार का मतान्तर *मुबारक अली* 195.00
कश्मीर और पाक संबंध *प्रकाशवीर शास्त्री* 300.00
भारतीय संग्रहालय एवं जनसम्पर्क
डॉ० आर० गणेशन 400.00
प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तु
डॉ० पृथ्वीकुमार अग्रवाल 650.00

महाभारत का काल निर्णय *डॉ० मोहन गुप्त* 300.00

विचार

इस्लाम का जन्म और विकास
असगर अली इंजीनियर 195.00
धर्मसत्ता और प्रतिरोध की संस्कृति
राजाराम भादू 275.00
यक्ष-संस्कृति : शिल्प और साहित्य *सुमनिका सेठी* 395.00
हिन्दू होने का धर्म *प्रभाष जोशी* 600.00

स्त्री विमर्श

हव्वामी बेटी *दिव्या जैन* 120.00
स्त्रीत्ववादी विमर्श : समाज और साहित्य
शर्मा शर्मा 195.00
स्त्री और पराधीनता *जान स्टुअर्ट मिल* 150.00
हम सभ्य औरतें *मनीषा* 250.00

मीडिया

मीडिया जनतंत्र और आतंकवाद
सुधीश पचौरी 225.00

भाषा

मानक हिन्दी का स्वरूप *कलानाथ शास्त्री* 250.00

लोकसाहित्य

हिन्दी की जनपदीय कविता
सं० विद्यानिवास मिश्र 600.00
भोजपुरी लोक साहित्य
डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय 400.00

लोक : पहचान, परम्परा और प्रवाह *श्यामसुन्दर दुबे* 225.00

अभिनय कला, भाषण, वार्ता

बोलने की कला *डॉ० भानुशंकर मेहता* 250.00

शिक्षा

बाल शिक्षण और शिक्षक *गिजुमाई* 200.00

डॉ० राममूर्ति त्रिपाठी को मूर्तिदेवी पुरस्कार

हिन्दी के लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान तथा विक्रम विश्वविद्यालय के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष **डॉ० राममूर्ति त्रिपाठी** को भारतीय ज्ञानपीठ की ओर से संस्कृति साहित्य और दर्शन के क्षेत्र में वर्ष 2001 का प्रसिद्ध मूर्तिदेवी पुरस्कान प्रदान करने की घोषणा की गयी है। एक लाख रुपये का यह प्रतिष्ठित पुरस्कार उन्हें उनकी कृति श्रीगुरु महिमा के लिए दिया जा रहा है। डॉ० त्रिपाठी वर्तमान में हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग (इलाहाबाद) के सभापति हैं। श्री त्रिपाठी को पूर्व में भी अनेक पुरस्कार मिल चुके हैं। इनमें प्रमुख हैं के०के० बिड़ला फाउंडेशन का डेढ़ लाख रुपये का शंकर पुरस्कार, एक लाख रुपये का जगतगुरु रामानंदाचार्य पुरस्कार, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ का साहित्य भूषण सम्मान, मध्यप्रदेश साहित्य परिषद भोपाल का आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी पुरस्कार एवं मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन का भवभूति अलंकरण।

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 4 **जनवरी 2003** **अंक : 1**

प्रधान सम्पादक
पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक
परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क
रु० 30.00

विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी
के लिए
अनुरागकुमार मोदी
द्वारा प्रकाशित
वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी
द्वारा मुद्रित

Website : **www.vvpbooks.com**

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment at
G.P.O. Varanasi
Licence No. LWP-VSI-01/2001

रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2002

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)
विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller
(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)
Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

☎ : Offi. : (0542) 2421472, 2353741, 2353082, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2353082